प्रकाशनः

डा0डी0आर0सिंह
कुलपति

डा0एच0जी0प्रकाश
निदेशक शोध

संपर्क: 05122534128 (O)
ई-मेल: directoraes@csauk.ac.in
vc@csauk.ac.in
चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर

प्रथम जैव संवर्धित गांव की स्थापना

अनूपपुर, जिला कानपुर देहात

कुपोषण मुक्त गाँव

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कानपुर

संकल्प से सिद्धि

प्रथम जैव संवर्धित गांव की स्थापना
अनूपपुर, कानपुर देहात

Directorate of Research

Chandra Shekhar Azad University of Agriculture & Technology

Kanpur

संरक्षक

डा. डी. आर. सिंह, कुलपति

अध्यक्ष

डा. एच. जी. प्रकाश, निदेशक शोध

उपाध्यक्ष

डा. ए. के. सिंह, कार्डीनेटर, प्रसार निदेशालय

सदस्य

डा. अशोक कुमार, के.वी.के., दलीपनगर
डा. मिथलेश वर्मा, के.वी.के., दलीपनगर
डा. वेदरतन, गृह विज्ञान महाविधालय
डा. अरविन्द कुमार, के.वी.के., दलीपनगर
डा. राजेश राय, के.वी.के., दलीपनगर
डा. अरूण कुमार सिंह, के.वी.के., दलीपनगर
डा. चन्द्रकला, के.वी.के., दलीपनगर
डा. सीमा सोनकर, गृह विज्ञान महाविधालय
डा. रश्मी सिंह, गृह विज्ञान महाविधालय
डा. अर्चना सिंह, गृह विज्ञान महाविधालय
डा. विनीता सिंह, गृह विज्ञान महाविधालय
डा. देवेन्द्र यादव, मृदा विज्ञान विभाग
डा. ए. के. सचान, मृदा विज्ञान विभाग
डा. आर. ए. यादव, बीज एवं प्रक्षेत्र
डा. ए. के. सचान, बीज एवं प्रक्षेत्र
डा. मनोज कटियार, दलहन अनुभाग
डा. विजय कुमार यादव, रबी सस्य अनुभाग
डा. स्वेता, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग
डा. भानू प्रताप सिंह, नार्प दलीपनगर
डा. खलील खान, मीडिया प्रभारी
श्री मनोज मिश्रा, शोध निदेशालय
डा. रवीन्द्र कुमार यादव, मृदा विज्ञान विभाग

उद्धरण

सी.एस.ए. जैव संवर्धित गॉव अनूपपुर – 2021
चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौघोगिक विश्वविघालय
कानपुर, उत्तर प्रदेश

प्रतियों की संख्या – १००

अनुसंधान निदेशालय, चन्द्रशेखर आजाद कृषि विश्वविघालय कानपुर द्वारा प्रकाशित

यूनीवर्सिटी प्रिन्टिंग प्रेस चन्द्रशेखर आजाद कृषि विश्वविघालय, कानपुर द्वारा मुद्रित अगस्त – 2021

डा. डी. आर. सिंह
कुलपति
Dr. D. R. Singh
Vice-Chancellor

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कानपुर–208 002, उत्तर प्रदेश, भारत
Chandra Shekhar Azad University of Agriculture & Technology
Kanpur-208 002, Uttar Pradesh, INDIA

प्राक्कथन

कुपोषण को शारीरिक रूप से सक्रिय एवं स्वस्थ जीवन जीने के लिए अति आवश्यक ऊर्जा एवं पोषक तत्वों की अपर्याप्त उपलब्धता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। कुपोषण से मस्तिष्क के विकास में कमी, विकलांगता, रोग के साथ ही शैक्षिक दक्षता, व्यक्तियों एवं समुदायों की आय अर्जन क्षमता में कमी आदि नकारात्मक प्रभाव पड़ते है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का मानना है कि खराब पोषण दुनिया के स्वास्थ्य के लिए सबसे महत्वपूर्ण खतरा है। अदृश्य भुखमरी भी कुपोषण का एक रूप है। यह विटामिन्स और खनिज तत्वों जैसे जिंक, आयोडीन, लोहा एवं प्रोविटामिन ए की उपलब्ध भोजन में कमी पायी जाती है जबकि अच्छे स्वास्थ्य और विकास के लिए भोजन में इन तत्वों का सतत् रूप से होना अनिवार्य है। देश में आजादी के पूर्व से लेकर आजादी के बाद आज तक कुपोषण की समस्या विधमान है। ग्लोबल पोषण रिपोर्ट 2018 के अनुसार विश्वभर में 15 करोड़ से अधिक बच्चे कुपोषण का शिकार है। भारत में लगभग 4 करोड़ 66 लाख बच्चें बौने व कम लम्बाई के रूप में कुपोषण से ग्रस्त हैं।

विश्वविद्यालय द्वारा कुपोषण ग्रस्त गॉव अनूपपुर, मैथा जिला– कानपुर देहात को सितम्बर 2020 को **"प्रथम जैव सवंर्धित गॉव"** अपनाकर विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों द्वारा कुपोषण दूर करने एवं रोजगारपरक कार्यक्रम संचालित कर गॉव के विकास एवं कुपोषण मुक्त करने में वैज्ञानिकों का योगदान अतुलनीय है जिससे अनूपपुर गॉव कुपोषण मुक्त हो गया। गॉव के विकास में जनपद कानपुर देहात के सहयोगी विभागों द्वारा निभाई गई भूमिका भी महत्वपूर्ण है।

अनूपपुर गॉव को कुपोषण मुक्त करने में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों, जनपद के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का योगदान सराहनीय है। मै आशा करता हूँ कि भविष्य में भी सभी लोग समन्वित प्रयास कर देश के कुपोषणग्रस्त गॉवों को कुपोषण मुक्त करने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करेंगे।

(डी. आर. सिंह)

Phone : +91-512-2534155 (Off.), **Fax :** +91-512-2533808 **E-mail :** vc@csauk.ac.in, www.csauk.ac.in

विवरणिका

क. सं.	विवरण	पेज नं0
1	प्रस्तावना	01
2	जैव संवर्धित गांव–अवधारणा	03
3	विश्वविद्यालय की क्या भूमिका	04
4	कृषकों की भूमिका	04
5	कार्यक्रम से फारवर्ड एवं बैकवर्ड लिंकेज	05
6	अनूपपुर गांव का चयन	06
7	जैव सवंर्धित गांव के उद्देश्य	07
8	जैव सवंर्धित गांव के घटक	08
5	कार्ययोजना एवं रणनीति	08
9	कार्यक्रम एवं उपलब्धियां संचालित कार्यक्रम	10

प्रस्तावना

कुपोषण को शारिरिक रूप से सक्रिय एवं स्वस्थ जीवन जीने के लिए अति आवश्यक ऊर्जा एवं पोषक तत्वों की अपर्याप्त उपलब्धता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसमें अपर्याप्त पोषण एवं अति पोषण दोनों को ही सम्मिलित किया जाता है। कुपोषण से मस्तिष्क के विकास में कमी, विकलांगता, रोग के साथ ही शैक्षिक दक्षता, व्यक्तियों एवं समुदायों की आय अर्जन क्षमता में कमी आदि नकारात्मक प्रभाव पड़ते है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का मानना है कि खराब पोषण दुनिया के स्वास्थ्य के लिए सबसे महत्वपूर्ण खतरा है। कुपोषण के तात्कालिक कारण अपर्याप्त मात्रा और गुणवत्ता वाले भोजन का सेवन और बीमारियों के कारण हैं। अदृश्य भुखमरी भी कुपोषण का एक रूप है। यह विटामिन्स और खनिज तत्वों जैसे जिंक, आयोडीन, लोहा एवं प्रोविटामिन ए की उपलब्ध भोजन में कमी पायी जाती है जबकि अच्छे स्वास्थ्य और विकास के लिए भोजन में इन तत्वों का सतत् रूप से होना अनिवार्य है। सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी के लिए जिम्मेदार कारणों में खराब आहार ग्रहणता जीवन के विभिन्न चरण जैसे गर्भावस्था और स्तनपान के समय इन तत्वों की अधिक आवश्यकता, रोग, संक्रमण या परजीवियों का होना आदि है। कुपोषित बच्चे संक्रामक रोगों के प्रति अधिक सवेंदनशील होते हैं। क्योंकि इनकी प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर होती है। जिससे उनमें मृत्यूदर अधिक पायी जाती है। पोषण की स्थिति और संक्रमण के प्रतिरोध का आपस में एक मजबूत सम्बन्ध होता है।

एकीकृत बाल विकास सेवा और मध्याह्न भोजन योजना जैसे कार्यक्रम प्रतिबद्धताओं के बावजूद हमारा देश कुपोषण से ग्रस्त है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएसएच –4) के अनुसार, पांच साल से कम उम्र के बच्चों में बौनापन, अपूर्ण विकास और कम वजन क्रमशः 38.4, 21 और 35.8 प्रतिशत है।

अफ्रीका के बाद भारत बच्चों के मुकाबले सबसे ज्यादा प्रभावित है। यह विश्व स्तर पर 50 प्रतिशत अपूर्ण विकसित बच्चों का भी घर है। ग्लोबल हंगर इंडेक्स 2019 के अनुसार, भारत भूख के गंभीर स्तर से पीड़ित है। कुपोषण स्पष्टरूप से दृष्टिगोचर नहीं होता है, क्योंकि एक बच्चा स्वस्थ दिखाई दे सकता है, भले ही वह सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी के कारण अंदर से पीड़ित हो। यह न केवल ग्रामीण भारत में बच्चों तक सीमित है, बल्कि शहरी बच्चों के बीच भी गहरी जड़ें जमाए हुए है। भारत सरकार ने राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, राष्ट्रीय पोषण रणनीति और राष्ट्रीय पोषण मिशन जैसी महत्वाकांक्षी योजनाओं को लागू किया है।

ऐसे समय में, जब पूरा विश्व कोविड 19 जैसी बीमारी से लड़ रहा है और खान–पान पर विशेष जोर दे रहे हैं। यह जरूरी है कि कुपोषण को मिटाने के लिये समाज से ऐसी असमानता को दूर किया जाये। यह भी आंकलन किया जा रहा है कि कोविड 19 वैश्विक महामारी के कारण भारत वर्ष 2025 तक न्यूट्रिशन के लक्ष्य को पूरा नहीं कर पायेगा जबकि कोरोना वायरस के संक्रमण के दौरान सभी को अधिक पोषण की आवश्यकता होती है जिससे इम्यून सिस्टम ठीक रहे। पोषण में इस असमानता को दूर करने के लिये जैव संवर्धित गांव अवधारणा पर प्रयास कर कुपोषण के उन्मूलन में महत्वपूर्ण लक्ष्य हासिल किया जा सकता है।

जैव संवर्धित गांव - अवधारणा
(Biofortified Village Concept)

अदृश्य भुखमरी के उन्मूलन हेतु देश एवं प्रदेश सरकारों द्वारा संचालित स्वास्थ्य योजनाओं एवं कार्यक्रमों के परिणाम सकारात्मक रहे हैं, लेकिन अभी और अधिक प्रयासों की आवश्यकता है। इसमें पोषक तत्वों को पूरक आहार के रूप में दिये जाने के साथ ही मांसाहारी आधारित उत्पादों को उपलब्ध कराने पर जारे दिया गया है। लेकिन इसे लम्बे समय तक सतत् रूप से नहीं चलाया जा सकता हैं अतः दूसरे स्थायी विकल्पों पर विचार करने पर, अनुवांशिक रूप से समृद्धि पोषक तत्वों वाली प्रजातियों के विकास को प्रमुखता दी जाय। यही एक आर्थिक रूप से ग्राह्यी विकल्प है। इस प्रक्रिया को हम जैव संवर्धन (Biofortification) के रूप में जानते है। इसके साथ ही त्वरित रूप से खाद्यन्नों में पोषक तत्व जैसे– जिंक एवं लोहा को बढाने के लिये अनुवांशिकी एवं सस्य तकनीकियों को अपनाया जा रहा है। गेहूँ एवं चावल अधिकांश भारतीयों का मुख्य भोजन है। इन खाद्यान्नों में सामान्यतः मानव शरीर के लिये अति आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्व जैसे जिंक, लोहा, प्रोटीन, विटामिन की कमी से आधी से अधिक जनसंख्या अदृश्य भुखमरी/कुपोषण से पीड़ित है। राष्ट्रीय विकास सूचकांक में बाधित कुपोषण के महत्व की वास्तविकता को दृष्टिगत रखते हुये कुपोषण उन्मूलन कार्यक्रम "मिलेनियम डेवलपमेंट गोल्स" में प्रमुखता से लिया गया है। इसमें तेजी लाने के लिये निरन्तर प्रयास करने की आवश्यकता है। इस दिशा में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश ने "सेविंग लाइफ, चेंजिंग लाइफ" के नारे के साथ "संकल्प से सिद्धि" अवधारणा के अन्तर्गत प्रथम "जैव संवर्धित गांव (Biofortified Village)" अवधारणा की पहल करते हुए देश में पहला प्रयास किया है।

कुपोषण उन्मूलन हेतु "जैव संवर्धित गाँव एक टिकाऊ, लक्ष्य आधारित एवं मूल्य प्रभावी" उपाय है। कुपोषण प्रभावित ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकतर जनसंख्या गरीब है, जिनके पास पोषक तत्वों से भरपूर पूरक आहार बाजार से खरीदने के लिए धन नहीं है। यहां तक दूध और सब्जियां खरीदना अत्यधिक कठिन होता है। ऐसी स्थिति में, किसानों के खेत पर जैव संवर्धित फसलें उगाकर, आहार में विभिन्न तरीकों से पोषक तत्वों को उपलब्ध कराकर कुपोषण उन्मूलन की दिशा में प्रभावी कदम उठाया जा सकता है।

विश्वविद्यालय की क्या भूमिका

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा अंगीकृत कुपोषणग्रस्त अनूपपुर गांव को सर्वेक्षण कर अंगीकृत किया गया है जिसके अन्तर्गत विश्वविद्यालय में संचालित विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत कुपोषण उल्मूलन, कृषि एवं पशुपालन उत्पादन में वृद्धि हेतु प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किये जायेगें जिससे कृषकों का विभिन्न विषयों में कौशल विकास हो सके और कृषक परिवारों का सामाजिक एवं आर्थिक स्तर में उन्नयन हो सके।

कृषकों की भूमिका

गॉव अनूपपुर के कृषक परिवारो हेतु विभिन्न प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रमों को गांव के कृषकों की सक्रिय सहभागिता द्वारा ही संचालित किये जायेंगे। इन कार्यक्रमों में कृषकगण मुख्य हितधारक (जांमीवसकमते) की भूमिका में होंगे तथा योजनाओं के सफल क्रियान्वयन हेतु स्वयं के स्त्रोतों से विश्वविद्यालय द्वारा बताये गये कुपोषण के उल्मूलन हेतु आहार लेगें। फसल उत्पादन एवं पशुपालन व्यवसाय व अन्य रोजगार परक कार्यक्रमों में भी, व्यवसाय को बढ़ाने हेतु स्वयं के स्त्रोतों का उपयोग करेगें।

कार्यक्रम से फारवर्ड एवं बैकवर्ड लिंकेज

बैकवर्ड लिंकेज के अन्तर्गत जैव संवर्धित गांव अनूपपुर 163 परिवारों की सक्रिय सहभागिता द्वारा ही संचालित किये जायेगें। कुपोषण/अदृश्य भुखमरी को दूर करने से सम्बन्धित विभिन्न कार्यक्रमो को विश्वविद्यालय के अन्तर्गत संचालित विभिन्न योजनाओं के माध्यम से संचालित किया जाना है प्रस्तावित है। जैव संवर्धित गांव अवधारण के वृहद स्तर पर प्रचार–प्रसार एवं विकास के लिए विभिन्न एन0जी0ओ0 कार्मिकों को भी प्रशिक्षित किया जायेगा जिससे आगामी समय में कुपोषण उल्मूलन हेतु महत्वपूर्ण भूमिका हो सके। गांव में 10 महिलाओं एवं सहयता समूह के साथ ही कृषक उत्पाक समूह (थ्च्व्) को गठन किया जा रहा है। स्वयं के उपयोग के बाद शेष जैव संवर्धित फसलों, फलों, सब्जियों पोषक तत्वों में भरपूर विभिन्न उत्पाद की गुणवत्ता, पैकेजिंग, तुलाई आदि की व्यवस्था कर अधिक से अधिक खरीदारों को आकर्षित कर गांव की आय में वृद्धि कर आत्मनिर्भर बनाने पर जोर दिया जाना प्रावधानित है। एग्रीलॉजिस्टिक सर्पोट द्वारा जैव संवर्धित उत्पाद को राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय स्तर पर पहुंच बनाने के उपयोग को भी सम्मिलित किया गया है। छोटी–छोटी प्रसंस्करण ईकाइयों के गठन के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था के साथ ही गांव के युवकों को स्टार्टअप के लिए भी प्रोत्साहित करने के लिए लिए एक विशेष अभियान को भी चलाया जायेगा।

फारवर्ड लिंकेज की दिशा में गांव में उत्पादित बायोफोर्टिफाइड/पोषक तत्व प्रधान फसल उत्पाद, जैम, जैली, मुरब्बा, दलिया इत्यादि के विपणन हेतु बाजार नेटवर्क हेतु संस्थाओ से समन्वय स्थापित कर उत्पादों के विपणन की कार्य योजना तैयार की गयी है।

अनूपपुर गांव का चयन

1. चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा जिला कानपुर देहात के मैथा ब्लॉक में स्थित गांव अनूपपुर को जैव संवर्धित गांव विकसित करने हेतु अंगीकृत किया गया। गांव में 163 कृषक परिवार अधिशासित हैं जिसमें अनुसूचित जाति के 15 परिवार एवं जनसंख्या 94 है। गांव का कुल क्षेत्रफल 102 हे0 है जिसमें 91 हे0 खेती योग्य है। खरीफ, रबी व जायद में अनुमानित क्रमशः 91, 81 व 30 हे0 पर विभिन्न फसलों का आच्छादन होता है। खरीफ में धान, मक्का व शाकभाजी फसलेंय रबी में गेहूं, चना, आलू, सरसों व शाकभाजी फसलें तथा जायद में मक्का, मूंग व उर्द की खेती की जाती है। पशुधन में भैंस–210, गाय–60, बकरी–290 व भेंड़–410 हैं। गांव में जोत का आकार 0.55 हे0/परिवार है तथा 59 प्रतिशत परिवारों का मुख्य व्यवसाय (59 प्रतिशत) फसल उत्पादन एवं पशुपालन ही है।

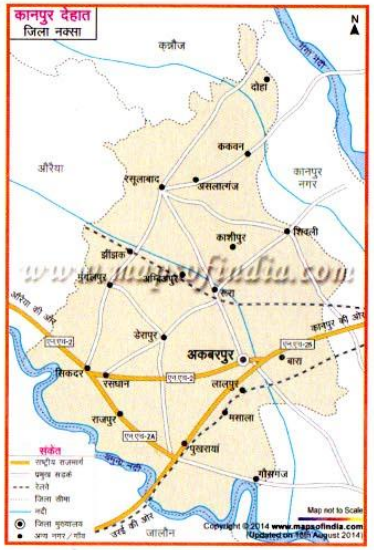

2. गांव की कुल जनसख्या 906 है जिसमें पुरूष–338 तथा महिलायें–322 शेष बच्चे हैं। गांव की साक्षरता 76 प्रतिशत है जिसमें महिला साक्षरता 73 प्रतिशत व पुरूष साक्षरता 79 प्रतिशत है। गांव में शिक्षित बेरोजगार की संख्या 140 है जिसमें 34 स्नातक व 09 परास्नातक युवक हैं।

3. गांव में 6 वर्ष तक के कुल बच्चे 246 जिनमें 67 बच्चे कुपोषित तथा 04 अति कुपोषित श्रेणी में है। महिलाओं की कुल आबादी 322 है जिनमें 106 महिलाएं कुपोषण के कारण रक्ताल्पता से प्रभावित है।

जैव सवंर्धित गांव के उद्देश्य

1. स्थायी एवं आर्थिक रूप से व्यवहारिक और उपभोक्तामुखी प्राथमिकता आधारित कृषि स्त्रोतों से पोषक आहार के सभी आवश्यक घटकों को सतत् रूप से गांव में उपलब्धता सुनिश्चित करना,
2. खाद्यान्न फसलों की प्रजातियों का पोषण मूल्य बढ़ाने के लिए अनुसंधान एवं विकास की क्षमता निर्माण कार्यक्रम संचालित करना,
3. जैव संवर्धित गांव के प्रत्येक घर के स्वयं के उपयोग के लिए पोषक तत्वों से प्रचुर फसलों के बीजों को उत्पादित करने के साथ ही, इसमें अन्य गावों में प्रचारित कर जाग्रत करना,
4. अन्य गावों के किसान व्यवहारिक रूप से पोषण वाटिका एवं अन्य क्रिया–कलापों का अवलोकन कर अपने गावों में भी इसे अंगीकृत करने के लिए प्रेरित करना,
5. जैव संवर्धित एवं विविधिता से जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करना,
6. कोविड–19 जैसे वैश्विक महामारी एवं अन्य बीमारियों से लड़ने के लिए प्रतिरक्षा हेतु उचित आहार की जानकारी देना,

7. पर्यावरण सुरक्षा,
8. कृषक अजीविका में बढ़ोत्तरी के लिए अतिरिक्त आय के साधन गांव स्तर पर उपलब्ध कराकर मूल्य संवर्धित तकनीक एवं भोज्य पदार्थ प्रसंसकरण यूनिट की स्थापना,
9. निर्यातोंन्मुखी पोषक तत्वों से भरपूर जैविक उत्पादन को प्रोत्साहन करना,
10. पारम्परिक उच्च गुणवत्ता एवं पोषण मूल्य की विभिन्न स्थानीय फसलों, प्रजातियों को पुर्नजीवित कर उनके संवर्धन, प्रसंस्करण एवं संरक्षण प्रदान करना,

जैव सवंर्धित गांव के घटक

1. पारम्पारिक तकनीकी दक्षता के आंकड़ो का संकलन एवं प्रलेखन,
2. गांवों में जैव संवर्धन के लिए क्षमता निर्माण एवं उन्नयन,
3. उच्च पोषक मूल्य वाली जैव संवर्धित/पारम्परिक देशी फसलों के विपणन व्यवस्था,
4. स्थानीय बीज बैंक की स्थापना (बीज में स्वाभिलम्बन),
5. सरकारी योजनाओं और सुविधाओं का एकीकरण,
6. कुपोषण उन्मूलन कारकों का विश्लेषण एवं उनका उपयोग।

कार्ययोजना एवं रणनीति

1. कुपोषणग्रस्त जनपद कानपुर देहात के मैथा ब्लॉक के अनूपपुर गांव का चयन।

2. वोकल फॉर लोकल अवधारणा ;टवबंस वित स्वबंस बवदबमचजद्ध के अन्तर्गत प्राकृतिक रूप से प्रचुर मात्रा में पोषक तत्वों वाली फसलों जैसे सहजन (मोरिंगा) नींबू, कढ़ी पत्ता, करौंदा, फालसा, पपीता, सांबा, कोदो, कंगनी, रामदाना, चिया, क्यूनोआ विभिन्न स्थानों से एकत्रित करके विश्वविद्यालय प्रक्षेत्रों पर पर्याप्त मात्रा में बीज बनाकर जैव संवर्धित गांव में आपूर्ति करना।
3. आनुवांशिकी या जैविक विधियों से विकसित पोषक तत्वों की प्रचुर मात्रा वाली विभिन्न फसलों की प्रजातियों को संकलित कर विश्वविद्यालय में फसल कैफेटेरिया बनाने के साथ ही जैव संवर्धित गावों के किसानों को सहज सुलभ कराकर उनके उपभोग के लिए प्रेरित करना।
4. जैव संवर्धित गांव के परिवारों के घरों के आस–पास खाली जमीन पर पोषण वाटिका की स्थापना,
5. मशरूम, डेयरी, शहद उत्पादन एवं प्रसंस्करण को बढावा देना।
6. कृषक परिवारों की पोषण सुरक्षा के साथ–साथ उसकी आय में वृद्धि हेतु विभिन्न उत्पादों की ग्रेडिंग, विधायनन, भण्डारण एवं विपणन सुविधाओं का विकास करना।
7. नवीन और कम लागत वाली कृषि तकनीक का उपयोग, सिंचाई आच्छादन में वृद्धि, मृदा स्वास्थ्य, जल, उर्वरक उपयोग दक्षता में वृद्धि करना।
8. फसल उत्पादन के जैविक आधारों पर योजनाबद्ध तरीके से आगे बढने के लिए भू–उपयोग की रणनीति तैयार करना।

9. संतुलित एवं पौष्टिक आहार मॉड्यूल तैयार कर कृषक परिवारों को दैनिक जीवन में अपनाने के लिए जागरूक अभियान चलाना।

10. कृषि के संबद्ध क्षेत्रों में रोजगारपरक कार्यक्रम जैसे दलिया, सेंवई, पापड़, अचार, मुरब्बा, जैम, जैली आदि कार्यक्रमों को संचालित करना।

कार्यक्रम एवं उपलब्धियां

संचालित कार्यक्रम

➲ ओरिएंटेशन कार्यशाला का आयोजन

जैव संवर्धित गाँव अवधारणा के प्रथम सोपान में कुपोशण/अदृष्य भुखमरी के सतत्, सरल ,आर्थिक रूप से ग्रहय एवं स्थायी समाधान की दिषा में विभिन्न आंकड़ों एवं सर्वेक्षणों के आधार पर अनूपपुर गांव का चुनाव कर 12 अक्टूबर, 2020 को डा0 डी0आर0सिंह, कुलपति चन्द्रषेखर आजाद कृशि एवं प्रौद्योगिक विष्वविद्यालय, कानपुर ने इसे देष के प्रथम जैव संवर्धित गांव में परिवर्तित करने का एतिहासिक कार्य किया है

➲ महिला स्वयं सहायता समूहों का गठन/पुनर्गठन

गॉव में ग्रामीण महिलाओं में सुपोषण के प्रति जागरूकता लाने व परिवारों की आय बढ़ाने हेतु कम से कम 10 महिला स्वयं सहायता समूहों का गठन किया जायेगा।

वर्तमान में बेजान पड़े स्वयं सहायता समूहों का पुनर्गठन किया जायेगा। महिला स्वयं सहायता समूहों द्वारा सुपोषण के प्रति जागरूकता लाने के अलावा पारिवारिक आय में वृद्धि हेतु प्रयास किये जायेंगे।

➲ हर घर में बायोफोर्टिफाइड/पोषक तत्व प्रधान फसलों की एक–एक गृह वाटिका स्थापित करना

गांव के सभी परिवारों मे बायोफोर्टिफाइड /पोषक तत्व प्रधान फसलों की गृह वाटिका विकसित किये जाने का लक्ष्य रखा गया है। प्रथम चरण में, 100 परिवारों को 5 प्रकार के पौधे (सहजन, नींबू, पपीता, बेल व करौंदा) तथा 10 प्रकार की सब्जियों के बीजों के मिनीकिट उपलब्ध कराये तथा गॉव में 27 परिवारों द्वारा बायोफोर्टिफाइड/पोषक तत्व प्रधान फसलों की गृह वाटिका विकसित की जा चुकी हैं।

➲ कृषक उत्पादक समूहों (FPOs) का गठन

गॉव के कृषकों की खेती–किसानी को और अधिक उत्पादक एवं लाभकारी बनाकर कृषकों को आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाने के लिए कृषक उत्पादक समूहों का गठन किया जा रहा है।

➲ गुणवत्ता युक्त विभिन्न फसलों के बीज उत्पादन कार्यक्रमों को प्रोत्साहन करना

गॉव मे गुणवत्तायुक्त खाद्यान्न फसलो (गेहू, धान, मक्का, बाजरा, सावां, कोदो, मड़वा आदि), दलहनी फसलों (उर्द, मूंग, मसूर, चना, मटर आदि), तिलहनी फसलों (राई–सरसों, मूंगफली, अलसी आदि) के बीज उत्पादन में आत्मनिर्भर

बनाने हेतु प्रदर्शन आयोजित किये जायेंगें। प्रथम चरण में, 100 परिवारों को प्रति परिवारों 5 किग्रा विश्वविद्यालय द्वारा विकसित जिंक व लौह तत्व प्रधान प्रजाति गेहूॅ की के.–1006 का बीज वितरण रबी–2020–21 में तथा 70 परिवारों को मक्का का बीज खरीफ–2021 में वितरित किया गया।

➲ मशरूम उत्पादन कार्यक्रम को बढ़ावा देना

गांव में कुपोषण दूर करने हेतु मशरूम उत्पादन का प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण प्रदान किया जायेगा जिसके अन्तर्गत प्रथम चरण में 17 परिवारों का चयन कर मशरूम उत्पादन का कार्यक्रम शुरू किया जा चुका है तथा मशरूम उत्पादक किसान घर की आवश्यकता के अतिरिक्त विपणन का कार्य भी शुरू कर चुके है जिससे उनको अतिरिक्त आमदनी भी प्राप्त होने लगी है।

➲ कुपोषित बच्चों को पूरक आहार वितरण

दिनांक 12 अक्टूबर को विश्वविद्यालय के कुलपति की देखरेख में गांव के सभी कुपोषित बच्चों को पूरक आहार का वितरण किया गया तथा भविष्य में पोषक आहार लेने की जानकारी दी गयी।

➲ कौशल उन्नयन / प्रशिक्षण कार्यक्रम

गांव में कृषि एवं पशुपालन उत्पादन को बढ़ावा देने, रोजगार परक कार्यक्रम तथा कुपोषण उल्मूलन हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं तथा भावी कार्यक्रमों को कैलेण्डर जारी किया गया जो निम्नवत् है।

क्र. सं.	प्रस्तावित कार्यक्रम	कार्यक्रम सम्पादन का माह
क	कृषक एवं महिला कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम	
1	स्वस्थ जीवन का महत्व तथा मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक पर प्रशिक्षण	नवम्बर, 2020
2	रबी फसल उत्पादन सम्बन्धी प्रशिक्षण	नवम्बर, 2020
3	मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण	दिसम्बर, 2020
4	भुखमरी व कुपोषण में उन्मूलन कारक पर प्रशिक्षण	दिसम्बर, 2020
5	पशुपालन सम्बन्धी प्रशिक्षण एवं टीकाकरण	दिसम्बर, 2020
6	कुपोषण के प्रकार व कुपोषण को प्रभावित करने वाले कारक पर प्रशिक्षण	जनवरी, 2021
7	बायोफोर्टिफाइड / पोषक तत्व प्रधान फसल प्रयोग द्वारा कुपोषण को दूर करने पर प्रशिक्षण	फरवरी, 2021
8	जायद फसल उत्पादन सम्बन्धी प्रशिक्षण	फरवरी, 2021
9	जायद मौसम में बायोफोर्टिफाइड / पोषक तत्व प्रधान फसलों की गृह वाटिका विकसित करने पर प्रशिक्षण	मार्च, 2021
10	खरीफ मौसम में बायोफोर्टिफाइड / पोषक तत्व प्रधान फसलों की गृह वाटिका विकसित करने पर प्रशिक्षण	अप्रैल, 2021
11	रबी मौसम में बायोफोर्टिफाइड / पोषक तत्व प्रधान फसलों की गृह वाटिका विकसित करने पर प्रशिक्षण	जून, 2021
12	खरीफ फसल उत्पादन सम्बन्धी प्रशिक्षण	जुलाई, 2021
13	पशुपालन सम्बन्धी प्रशिक्षण एवं टीकाकरण	जुलाई, 2021
ख	एन.जी.ओ. प्रशिक्षण कार्यक्रम	
1	स्वस्थ जीवन का महत्व तथा मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक पर प्रशिक्षण	नवम्बर,2020
2	कुपोषण के प्रकार व कुपोषण को प्रभावित करने वाले कारक पर प्रशिक्षण	जनवरी,2021
3	बायोफोर्टिफाइड / पोषक तत्व प्रधान फसल प्रयोग द्वारा कुपोषण को दूर करने पर प्रशिक्षण	फरवरी,2021
4	खरीफ मौसम में बायोफोर्टिफाइड / पोषक तत्व प्रधान फसलों की गृह वाटिका विकसित करने पर प्रशिक्षण	अप्रैल,2021
5	रबी मौसम में बायोफोर्टिफाइड / पोषक तत्व प्रधान फसलों की गृह वाटिका विकसित करने पर प्रशिक्षण	जून,2021
ग	किसान मेला एवं पौध वितरण कार्यक्रम	
1	भारत का गणतन्त्र दिवस	26 जनवरी,2021
2	प्रो.एम.एस. स्वामीनाथन जन्म दिवस	7 अगस्त, 2021
3	भारत का स्वतन्त्रता दिवस	15 अगस्त, 2021
4	प्रधानमंत्री मा0 श्री नरेन्द्र मोदी जी का जन्म दिवस	17 सितम्बर,2021
5	राष्ट्रपिता महात्मा करमचन्द गांधी जी का जन्म दिवस	2 अक्टूबर,2021

उपलब्धियाँ

विवरण	29.06.2020 को कुपोषण का स्तर	12.10.2020 को कुपोषण का स्तर	31.03.2021 को कुपोषण का स्तर	30.06.2021 को कुपोषण का स्तर
गंभीर रूप से कुपोषित बच्चें	5 लाल	5 लाल	5 पीला	0
कुपोषित बच्चें	23 पीला	23 पीला	11 पीला	0
एनिमिक महिलाएं	10	10	4	0
कुल	38	38	15	0

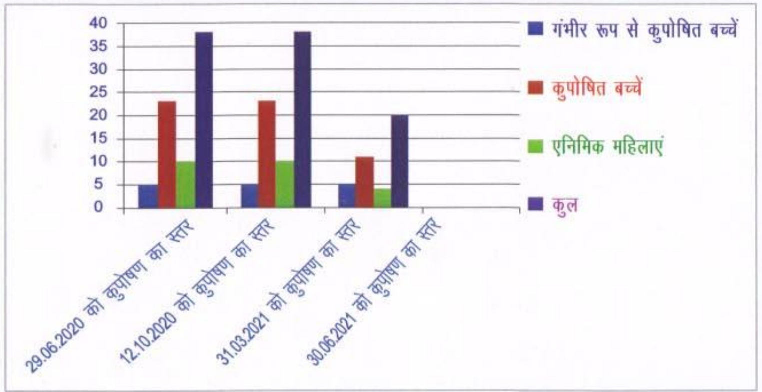

कुपोषणमुक्त गॉव - अनूपपुर (कानपुर देहात)

उपलब्धियों के चित्रण